International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-07-2022, Accepted: 14-08-2022, Published: 31-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 95-96

प्रवासी साहित्यकार के रूप में 'सुषम बेदी'

डॉ. ड़ी. मोहिनी
पोस्ट डॉकटोरल फ़ेलो, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, ओडिशा, भारत

सारांश
प्रवासी साहित्य की रचना कई सालों पहले से हो रही है। प्रवासी साहित्य विदेश के अनेक देशों में रह रहे भारतीय रचते आ रहे हैं। मॉरिशस भारत के सबसे निकट होने के कारण सबसे अधिक रचना वहीं हुई है। अमेरिका इंग्लैंड में भी अनेक साहित्य लिखे गये हैं। प्रवासी साहित्य हिन्दी में एक विशिष्ट स्थान रखता है। हमें एक नवीन समाज और संस्कृत के करीब ले जाता है । सुषम बेदी की रचनाओं का धरातल वही क्षेत्र रहा है जहाँ कि वह निवासी हैं। अमेरिका एक ऐसी जगह है जो सिर्फ बाहरी सुंदरता का दिखावा करता है। 'हवन' उपन्यास में गुड्डो का चरित्र वैसा ही है। गुड्डो न्यूयॉर्क की कल्पना कर भारत से न्यूयॉर्क आ गई थी। पर उसे वैसा कुछ भी देखने को मिला नहीं जिसकी उसने कल्पना की थी। जिसको जो रास आता है उसे वही अच्छा लगता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार अपने देश के रंग में रंग जाता है वही दूसरे देश के परिवेश में खुद को रंगा नहीं पाता। भारतीयों की एक गलत फहमी रही है कि अमेरिका में जीवन यापन बड़े शानो शौकत से होती है। सुषम बेदी ने इसको बड़े रोचक ढंग से दिखाया है। प्रवासी जीवन की विसंगतियों को देखकर हम सोच में पड़ जाते हैं कि क्या यह वही कल्पित जीवन है जिसको पाने के लिए स्वदेश छोड़ विदेश में रहने लगते हैं। अमेरिका के प्रवासी भारतीयों के घर उनकी रहन–सहन और उनके सार्वजनिक स्थानों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

मूल शब्दः प्रवासी साहित्यकार, सुषम बेदी की रचना

प्रस्तावना
अन्य साहित्य विधा की तरह प्रवासी साहित्य भी हिंदी साहित्य की एक नवीन विधा एवं चेतना है। भारतीय वंशज विदेशों में रहकर सृजन करना प्रवासी साहित्य कहलाता है। वही हिंदी को माध्यम बनाकर हिंदी भाषा में साहित्य रचना 'प्रवासी हिंदी साहित्यकार' कहलाते हैं। वॉक्यूबलरी डिक्शनेरी के अनुसार–"A diaspora is a large group of people with a similar heritage or homeland who have since moved out to places all over the world."[1] भारत के अधिक संख्यक लोग विदेश में बस गए हैं । कनाडा, इंग्लैंड,अमेरिका आदि कई स्थानों में प्रवासी हिंदी साहित्य का फैले हुए हैं। डॉ. रामदरश मिश्र कहते हैं– "प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"[2] इस विषय पर डॉ. सुषम बेदी के विचार हैं कि प्रवासी साहित्य की यात्रा बहुत लंबी है और पड़ाव दूर है, परंतु इतना सच है कि प्रवासी साहित्य अपनी पहचान यात्रा पर चल चुका है और पड़ाव भी कुछ दिखाई दे रहा है। डॉ. बेदी चाहती हैं कि प्रवासी लेखक गर्वोक्तियों से बचें और आत्मन्वेषण करें, लेकिन भारत के हिंदी समाज को भी प्रवासी साहित्य के प्रति अपने उपेक्षा भाव को समाप्त करके उसकी आंतरिक शक्ति का अन्वेषण करना होगा, तभी प्रवासी हिंदी की यात्रा अपने लक्ष्य तक पहुँच सकेगी। प्रवासी साहित्यकार अपने परिवेश को वर्णन करने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति और भाषा का भी विकास कर रहे हैं। हिंदी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय पहचान देने का श्रेय प्रवासी साहित्यकारों को जाता है।

सुषम बेदी की रचनाओं का धरातल वही क्षेत्र रहा है जहाँ कि वह निवासी हैं। अमेरिका एक ऐसी जगह है जो सिर्फ बाहरी सुंदरता का दिखावा करता है। श्हवनश उपन्यास में गुड्डो का चरित्र वैसा ही है। गुड्डो न्यूयॉर्क की कल्पना कर भारत से न्यूयॉर्क आ गई थी। पर उसे वैसा कुछ भी देखने को मिला नहीं जिसकी उसने कल्पना की थी । जिसको जो रास आता है उसे वही अच्छा लगता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार अपने देश के रंग में रंग जाता है वही दूसरे देश के परिवेश में खुद को रंगा नहीं पाता। भारतीयों की एक गलत फहमी रही है कि अमेरिका में जीवन यापन बड़े शानो शौकत से होती है। सुषम बेदी ने इसको बड़े रोचक ढंग से दिखाया है। प्रवासी जीवन की विसंगतियों को देखकर हम सोच में पड़ जाते हैं कि क्या यह वही कल्पित जीवन है जिसको पाने के लिए स्वदेश छोड़ विदेश में रहने लगते हैं। 'हवन' उपन्यास में लेखिका कहती हैं कि "मैनहैटन के बीचोंबीच सड़क पर खुलते ग्राउंड फ्लोर पर ही पिंकी का अपार्टमेंट था। अपार्टमेंट के ठीक सामने सड़क के दूसरे किनारे पर नए फैशन के कपड़ों के 'बुतीक' और किताबों की दुकानें थीं। देर रात तक रौनक मेला लगा रहता था। सड़क पर पिंकी अपार्टमेंट की खिड़कियां हमेशा बंद रखती थी। उन पर मोटे मोटे पर्दे टंगे थे। कभी पलभर को भी पर्दे हटा दो तो आने जाने वाले लोगों की आँखें घर में घुसपैठ करती दीखती थीं। बंद कमरे में हिन्दुस्तानी पकवानों और मसालों की ताजी वासी गंध जैसे हमेशा के लिए बस गयी थी पर्दे, कालीन, बिस्तर सभी में यही गंध सेंट्रल हीटिंग के ताप में घुल मिलकर वह गंध छाती को जकड सी लेती थी। गुड्डो को घबराहट और उबकाई सी होने लगती। वह पिछवाड़े के बाथरूम की खिड़की खोल मुंह बाहर निकाल तेजी से सांस भरती निकालती तो कुछ चौन आता । यह खिड़की दो इमारतों के बीच में छूटे कुछ खुले हिस्से में खुलती थी, इसी से यहाँ लोगों का शोर या आना जाना नहीं था।" [3]

सुषम बेदी ने अपनी रचनाओं में अमेरिका के प्रवासी भारतीयों के घर उनकी रहन–सहन और उनके सार्वजनिक स्थानों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। इनके द्वारा एक बड़े मुद्दे का भी खुलासा हुआ है। वह है पारिवारिक हिंसा, पिता या माता द्वारा अपने बच्चों की पिटाई या पति द्वारा अपने पत्नी की पिटाई आदि हिंसा जैसे आम हो गई हैं। ष्इमारत के रिवाल्विंग दरवाजे से अन्दर घुसते ही मीरा ने देखा.... लोगों के झुण्ड, चीखते–चिल्लाते, विवाद करते हुए स्पेनिश या पोर्तोरिकन युग्म, कुछ और लोगों की गर्मागर्म बहसें, ऊँची आवाजें, अतिरंजित हाव भाव यहीं ग्राउंड फ्लोर पर अपराध अदालतें थीं अक्सर सुबह सुबह यहाँ जमघट हो जाता था। ज्यादातर बीवी पिटाई, बच्चा पिटाई के केसों की – सुनवाई हो रही होती थी आज भी कुछ ऐसा ही मामला दीख रहा था। लड़की रो–रोकर और चिल्ला–चिल्लाकर गालियाँ दिए जा रही थी। कुछ रिश्तेदार थे शायद बाकी लोगों में यहाँ उसने ऐसे केस भी सुने थे जहाँ ड्रग खाकर मां बाप ने बच्चे की इतनी पिटाई की कि बच्चा या तो परलोक सिधार गया या जिंदगी भर के लिए अपांग हो गया। इतना पढ़ लिखकर भी ऐसे अनुत्तरदायी माँ बाप हो सकते हैं, मीरा को यह बात कतई स्वीकार नहीं होती थी ।"[4] लेखिका ने प्रवासी जीवन की विसंगतियों को बहुत ही भावपूर्ण चित्रण किया है। लेखिका ने अपने विलक्षण प्रतिभा का दर्शन भी कराया है। उनकी उपन्यास 'नवाभूम की रस कथा' में नवीन शब्दों का प्रयोग किया है जैसे नवाभूम और पूराभूमि। नवाभूम का प्रयोग उन्होंने विदेशी धरती में प्रवेश करने वाले भारतीयों के संदर्भ में कहा है। वही स्वदेशी भारतीयों को पूराभूमि कहकर संबोधित किया है। इस उपन्यास में लेखिका ने नवाभूम अमेरिका के प्रेम प्रसंगों को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। नवाभूम में प्रेमियों का प्रेम का काम–वासना पूर्ण रहता है। वे शादी–विवाह को अमान्य करते हैं। प्रेम प्रसंगों तथा शादी के उपरांत जीवन में हो रहे समस्याओं को सुषम बेदी ने बड़ी कुशलता से दिखाया है। बेदी जी के उपन्यास सिर्फ प्रवासी भारतीय पर ही आधारित नहीं होती उनकी रचनाएँ भारत भूमि की कथाओं को भी स्पर्श कर चुकी हैं ।

निष्कर्ष

सुषम बेदी प्रवासी साहित्यकार होकर भी भारतीय साहित्य का प्रभाव उन पर देखने को मिलता है। भारतीय चिंतन, भारतीय कला और संस्कृति को वह बड़ी सूझबूझ के साथ अपनी रचनाओं के जरिए प्रस्तुत करती हैं। लेखिका ने अपने साहित्य में समाज के संघर्षों के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया है। जीवन के हर एक पहलुओं को अपनी रचनाओं में उतारा है। प्रवासी हिन्दी साहित्य की रचना कई सालों पहले से शुरू हो चुकी है । हिन्दी प्रवासी साहित्यकार विदेश अनेक देशों में फैले हुए हैं । मॉरिशस भारत के सबसे निकट होने के कारण सबसे अधिक रचना वहीं हुई है। अमेरिका, इंग्लैंड में भी अनेक साहित्य लिखे गये हैं । प्रवासी साहित्य हिन्दी में एक विशिष्ट स्थान रखता है। हमें एक नवीन समाज और संस्कृत के करीब ले जाता है ।

संदर्भ सूची

1. https:@@www-vocabulary-com@dictionary@diaspora
2. अक्षरम संगोष्ठी, अप्रैल दृजून 2006, पृष्ठ –67
3. सुषम बेदी, हवन, पराग प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1989, पृ. 12.
4. सुषम बेदी, लौटना, पराग प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1994, पृष्ट –43 .